97

''महिमा में ऊपर उठाया गया''

मरकुस 16:19; लूका 24:50-53; प्रेरितों 1:9-12, एक निकट दृष्टि

हम मसीह के जीवन के स्वाभाविक निष्कर्ष अर्थात उसके स्वर्गारोहण पर आ पहुंचे हैं। अपने चेलों को अंतिम बातें कहते हुए, यीशु ने बताया कि दुख उठाने के बाद उसका महिमा पाना आवश्यक था, जो स्वर्ग पर उसके उठाए जाने के समय हुआ: ''क्या अवश्य न था, कि मसीह ये दुख *उठाकर* अपनी महिमा में प्रवेश करे?'' (लूका 24:26)। पौलुस ने लिखा है कि परमेश्वर की सामर्थ की सबसे बड़ी बात यह थी ''जो उसने मसीह के विषय में किया, कि उस को मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर'' बिठाया (इफिसियों 1:20)।

स्वर्गारोहण मसीह के जीवन का स्वाभाविक अन्त था, क्योंकि वह स्वर्ग से ही आया था, इसलिए यह उपयुक्त लगता है कि उसे वापस बुला लिया जाता। यह स्वाभाविक अन्त था, क्योंकि यीशु के जीवन से यही दिखाया गया था कि परमेश्वर का ''हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार बनाएं'' कहने का क्या अर्थ था (उत्पत्ति 1:26क)। ऐसा होने के कारण, इस बात में दम है कि यीशु ने परमेश्वर की सम्पूर्ण संगति के लिए वापस लौट जाना था, जो अदन की वाटिका में कभी मनुष्य को मिली थी।

स्वर्ग पर उठाए जाने के बारे में बाइबल की शिक्षा का अध्ययन करते हुए, हमें यह मानना ही पड़ेगा कि हम इसे पूरी तरह से नहीं समझ सकते। उदाहरण के लिए, यीशु का जी उठा शरीर (''मांस और हड्डियों''[2] के साथ) कैसे बदला होगा कि वह स्वर्ग के फाटकों में प्रवेश कर पाया? नया नियम इस और उठने वाले अन्य प्रश्नों का उत्तर नहीं देता। पवित्र शास्त्र स्वर्गारोहण का विवरण अवश्य देता है, पर इसे समझाने का कोई प्रयास नहीं करता। इस वास्तविक घटना को बताती तीन आयतें हैं:

> तब वह उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया, और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी और उन्हें आशीष देते हुए वह उन से अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा

लिया गया और वे उस को दण्डवत करके बड़े आनन्द से यरूशलेम को लौट गए (लूका 24:50-52)।

यह कहकर वह उन के देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया; और बादल ने उसे उनकी आंखों से छिपा लिया। और उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उन के पास आ खड़े हुए। और कहने लगे; हे गलीली पुरुषो, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को जाते देखा है, उसी रीति से वह फिर आएगा।

तब वे जैतून नामक पहाड़ से जो यरूशलेम के निकट एक सब्त के दिन की दूरी पर है, यरूशलेम को लौटे (प्रेरितों 1:9-12)।

निदान प्रभु यीशु उन से बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया (मरकुस 16:19)।

इन संक्षिप्त विवरणों के अलावा, नये नियम की इस घटना के प्रत्यक्ष या परोक्ष कई हवाले हैं। एक नमूना यह है:

- पहले सुसमाचार संदेश में, पतरस ने कहा था कि यीशु को ''परमेश्वर के दाहिने हाथ सर्वोच्च पद'' दिया गया था (प्रेरितों 2:33)।
- अपने दूसरे संदेश में, मसीह की बात करते हुए, पतरस ने कहा था, ''अवश्य है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहे, जब तक कि वह सब बातों का सुधार न कर ले''[3] (प्रेरितों 3:21)।
- पिसिदिया के अन्ताकिया के आराधनालय में अपने संदेश में, पौलुस ने कहा था कि परमेश्वर ने ''[यीशु को] मरे हुओं में से जिलाया कि वह कभी न सड़े'' (प्रेरितों 13:34)।
- इफिसुस की कलीसिया के नाम पौलुस ने अपनी पत्री में स्वर्गारोहण पर यह विस्तृत टिप्पणी शामिल की: ''इसलिए वह कहता है कि वह ऊंचे पर चढ़ा, और बन्दियों को बान्ध ले गया,[4] और मनुष्यों को दान दिए।[5] (उसके चढ़ने से, और क्या पाया जाता है, केवल यह कि वह पृथ्वी की निचली जगहों में उतरा भी था[6] और जो उतर गया यह वही है जो सारे आकाश से ऊपर चढ़ भी गया, कि सब कुछ परिपूर्ण करे)'' (इफिसियों 4:8-10)।
- प्रकाशितवाक्य के अध्याय 12 में, हमें एक स्त्री और बड़े लाल अजगर का दर्शन मिलता है। आयत 5 में, यीशु के जन्म का और बाद में उसके स्वर्गारोहण का हवाला है: ''वह बेटा जनी जो लोहे का दण्ड लिए हुए,[7] सब जातियों पर राज्य करने पर था, और वह बच्चा एकाएक परमेश्वर के पास और उसके सिंहासन के

पास उठाकर पहुंचा दिया गया।''

स्वर्गारोहण से दो बड़े उद्देश्य पूरे हुए: इससे अतीत का चरम हुआ और भविष्य के लिए मार्ग तैयार हुआ। इसे दूसरे ढंग से कहें तो स्वर्गारोहण पृथ्वी की यीशु की सेवकाई का चरम भी था और उसके चेलों की सेवकाई के लिए मार्ग तैयार करने का अगला कदम भी। बिना स्वर्गारोहण के, यीशु के पुनरुत्थान और लगभग पचास दिन बाद पिन्तेकुस्त वाले दिन आत्मा के आने में एक खाई थी।[8] स्वर्गारोहण पृथ्वी पर यीशु की सेवकाई तथा बाद की उसके प्रेरितों की सेवकाई के बीच एक निर्णायक विभाजक बिन्दु है।

मसीह की महिमा होना

यीशु के महिमा में ऊपर ले लिए जाने से स्वर्गारोहण अतीत का चरम बन गया। यीशु ने बताया कि यह ''आवश्यक था, कि मसीह ... अपनी महिमा में प्रवेश करे'' (लूका 24:26)। पौलुस ने लिखा कि यीशु ''महिमा में ऊपर उठाया गया'' (1 तीमुथियुस 3:16)। पतरस ने कहा कि ''परमेश्वर ... ने उसे ... महिमा दी'' (1 पतरस 1:21)।

स्वर्गारोहण जितना आरम्भ में हैरान करने वाला हो सकता है, उतना ही मसीह के काम का चरम बिन्दु है। इस पर एक पल के लिए विचार करें। कौन सी बात अधिक रोमांचक है: कुछ शर्तों को पूरा करना या उसे पाना, जिसके लिए आपने उन शर्तों को पूरा किया?[9] यहां पर उद्धारकर्त्ता अपने आप को महायाजक और राजा के रूप में काम करने के लिए तैयार कर रहा था। स्वर्गारोहण से उस तैयारी को मुकुट पहनाया गया। फिलिप यैन्सी ने लिखा है:

> यदि [पुनरुत्थान वाला] रविवार चेलों के जीवनों का सबसे रोमांचित दिन था, तो यीशु के लिए स्वर्गारोहण का दिन होगा। वह अर्थात सृष्टिकर्त्ता, जिसने इतना नीचे आकर, इतना कुछ त्याग दिया था, अब घर लौट रहा था। एक सिपाही के दूर और खूनी जंग से समुद्र पार घर लौटने की तरह। अन्तरिक्ष यात्री के पृथ्वी के अपने परिचित वातावरण में अपना स्पेससूट उतारने की तरह।[10] अन्त में घर पहुंच गया।[11]

महिमा हुई

कल्पना करने का प्रयास करें कि यीशु के स्वर्ग में लौटने पर कैसा माहौल होगा। अपने मन में, क्या आप आनन्द के नारे सुन सकते हैं, जो स्वर्ग में गूंज उठे होंगे?

भजन संहिता 24 एक महान राजा के घर लौटने पर विजय का गीत है। किसी ने सुझाव दिया है कि इन शब्दों को प्रभु के स्वर्ग में लौटने के लिए लागू किया जा सकता है। इसी आयत का इस्तेमाल करते हुए, अपनी आंखों के सामने वह दृश्य बनाने का प्रयास करें, जो यीशु के स्वर्ग में उठाए जाने जैसा हो।

उसके ऊपर उठाए जाने पर स्वर्गदूत उससे भेंट कर उसके आगे-आगे चलते हैं। स्वर्गीय नगर में पहुंचने पर, वे पुकार उठते हैं: ''हे फाटको, अपने सिर ऊंचे करो, हे

सनातन के द्वारो, ऊंचे हो जाओ, क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा!'' (आयत 7)। नगर के भीतर से रहने वालों ने पूछा, ''वह प्रतापी राजा कौन है?'' (आयत 8क)। यीशु के साथ-साथ चल रहे स्वर्गदूतों ने पुकारा, ''परमेश्वर जो सामर्थी और पराक्रमी है, परमेश्वर जो युद्ध में पराक्रमी है!'' (आयत 8ख)। फिर वे दोबारा पुकारने लगे, ''हे फाटको, अपने सिर ऊंचे करो! हे सनातन के द्वारो, तुम भी खुल जाओ! क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा!'' (आयत 9)। फिर, नगर के भीतर वालों ने पूछा, ''वह प्रतापी राजा कौन है?'' (आयत 10क)। इस बार यीशु के साथ-साथ चलने वालों ने यह गीत गाया: ''सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी राजा है'' (आयत 10ख)।

यीशु के स्वर्ग के फाटकों में प्रवेश करने पर, उसे उसी महिमा में वापस ले लिया गया, जो ''जगत के होने से पहले'' (यूहन्ना 17:5) पिता के साथ उसकी थी:

> इस कारण परमेश्वर ने उसे अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है।[12] कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है (फिलिप्पियों 2:9-11)।

स्वर्ग की सारी सेनाएं उसकी स्तुति करने लगीं, क्योंकि निष्कलंक मेमना मनुष्यजाति के पापों के लिए वध किया गया था (देखें 1 पतरस 1:18, 19)। यूहन्ना ने लिखा है:

> और जब मैंने देखा, तो उस सिंहासन और उन प्राणियों और उन प्राचीनों के चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिनकी गिनती लाखों और करोड़ों की थी। और वे ऊंचे शब्द से कहते थे, कि वध किया हुआ मेमना ही सामर्थ, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और महिमा, और धन्यवाद के योग्य है (प्रकाशितवाक्य 5:11, 12)।

फिर परमेश्वर ने ''उस को ... स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर'' बिठाया (इफिसियों 1:20)।

महायाजक के रूप में

स्वर्ग में उठाए जाकर, यीशु हमारा *महायाजक* बन गया। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा है कि ''हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है,[13] अर्थात परमेश्वर का पुत्र यीशु'' (इब्रानियों 4:14)।

पुराने नियम में, वर्ष में एक बार अर्थात प्रायश्चित के दिन महायाजक अपने और लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिए पशुओं का लहू लेकर परम पवित्र स्थान में प्रवेश करता था (देखें लैव्यव्यवस्था 16:2-34)। हमारे महायाजक के रूप में, जब यीशु स्वर्ग में वापस गया, तो वह वैसे ही अर्थात *हमारे* पापों के प्रायश्चित के लिए अपना ही लहू लेकर गया।

इसके बारे में, इब्रानियों की पुस्तक कहती है:

> परन्तु जब मसीह आने वाली अच्छी-अच्छी वस्तुओं का महायाजक होकर आया, तो उसने और भी बड़े और सिद्ध तम्बू से होकर, जो हाथ का बनाया हुआ नहीं, अर्थात इस सृष्टि का नहीं और बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं, पर अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया (9:11, 12)।

> क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में जो सच्चे पवित्र स्थान का नमूना है, प्रवेश नहीं किया, पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिए अब परमेश्वर के साम्हने दिखाई दे (इब्रानियों 9:24)।

> पर यह व्यक्ति तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिए चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा (इब्रानियों 10:12)।

यीशु की महायाजकाई की एक और विशेष बात यह है कि वह हमारा मध्यस्थ है। पौलुस ने लिखा है, ''क्योंकि परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है'' (1 तीमुथियुस 2:5)। इस प्रबन्ध का एक अद्‌भुत पहलू यह है कि महायाजक के रूप में यीशु *सहानुभूति रखने वाला* है:

> क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; वरन वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौ भी निष्पाप निकला। इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे (इब्रानियों 4:15, 16)।

शायद यह एक कारण है कि यीशु के लिए *शारीरिक रूप* में स्वर्ग में उठाया जाना क्यों आवश्यक था। कहा जाता है कि वहां यीशु जो *मनुष्य* है, का योगदान हमेशा रहेगा। 1 तीमुथियुस 2:5 में ''मनुष्य'' शब्द पर ध्यान दें: ''... परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में एक ही बिचवई ... मसीह यीशु जो *मनुष्य* है।'' ''मार्स नामक पहाड़ी पर दिए गए संदेश'' में पौलुस ने ऐसी ही शब्दावली का इस्तेमाल किया था: परमेश्वर ने ''एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस *मनुष्य* के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है'' (प्रेरितों 17:31)। प्रकाशितवाक्य 4 और 5 के सिंहासन वाले दृश्य में, मेमना (अर्थात यीशु) सिंहासन के सामने ऐसे खड़ा है ''मानो एक वध किया हुआ मेमना'' हो (प्रकाशितवाक्य 5:6)-जिससे कुछ लेखकों को इस सम्भावना का संकेत मिलता है कि किसी न किसी तरह, स्वर्ग में भी

वह क्रूसारोहण के चिह्नों को कायम रखता है।

स्वर्ग पर उठाए जाने के बाद, यीशु ने यह नहीं भुलाया कि शरीर कितना निर्बल है या आपको और मुझे इन शारीरिक देहों में कितना संघर्ष करना पड़ता है। हमारे महायाजक के रूप में, वह यह सब याद रखता और समझता है![14]

राजा के रूप में

यीशु सचमुच हमारा महायाजक बना; परन्तु ''महिमा पाई'' शब्द सुनकर हमें लग सकता है कि उसे *राजा* की तरह मुकुट पहनाया गया था। जैसा पहले ही कहा गया था, ''यीशु ... स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया'' (मरकुस 16:19)। बार-बार पवित्र शास्त्र में इस बात का ऐलान है कि मसीह अब परमेश्वर की दाहिनी ओर है। स्तिफनुस ने मरते हुए, ''पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर की दाहिनी ओर खड़ा देखकर कहा; देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ, और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर की दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूं'' (प्रेरितों 7:55, 56)।[15] पौलुस ने सब मसीही लोगों से आग्रह किया कि ''स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठा है'' (कुलुस्सियों 3:1)। पतरस ने यीशु मसीह के विषय में लिखा जो ''स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठ गया; और स्वर्गदूत और अधिकारी और सामर्थी उसके आधीन किए गए हैं'' (1 पतरस 3:21, 22)।

पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने इस प्रमाण के रूप में कि यीशु परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है और उसे प्रभु के रूप में मुकुट पहनाया गया है, उस दिन के आश्चर्यकर्म के दृश्यों तथा गूंज का इस्तेमाल किया:

> इस प्रकार परमेश्वर ने दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उंडेल दिया है, जो तुम देखते और सुनते हो।[16] क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह आप कहता है, कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों तले की चौकी न कर दूं। सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को, जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी (प्रेरितों 2:33-36)।

पौलुस ने लिखा कि परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से जिलाया ...

> ... स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर सब प्रकार की प्रधानता, और सामर्थ, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में पर आने वाले लोक में भी लिया जाएगा, बिठाया; और *सब कुछ* उसके पांवों तले कर दिया; और उसे *सब वस्तुओं* पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया (इफिसियों 1:20-22)।

सिंहासन पर अपने पिता के साथ सहशासक राजा के रूप में बैठने के लिए मसीह को मुकुट पहनाने का अवसर कितना अद्‌भुत होगा! बहुत से लोग मानते हैं कि दानिय्येल 7 में भविष्यवक्ता का रात का दर्शन यीशु का राज्याभिषेक ही दिखाता है:

> मैं ने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान सा [यीशु] कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन [परमेश्वर] के पास पहुंचा, और उसको वे उसके समीप लाए। तब उस [यीशु] को ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य [कलीसिया] दिया गया कि देश-देश और जाति-जाति के लोग और भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा (दानिय्येल 7:13, 14)।[17]

स्वर्ग पर उठाए जाने से कुछ समय पहले यीशु ने दावा किया था कि ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है'' (मत्ती 28:18)। सबके ऊपर केवल एक ही ''प्रभु है'' (इफिसियों 4:5), और वह यीशु है।[18] स्वर्ग पर उसका उठाया जाना हमें इस महान सच्चाई से आश्वस्त कराता है!

चेलों की तैयारी

मैंने पहले कहा था कि स्वर्ग पर यीशु का उठाया जाना निश्चय ही पृथ्वी की उसकी सेवकाई के सम्बन्ध में यीशु के लिए अति रोमांचित दिन होगा। परन्तु स्वर्ग पर उठाया जाना केवल उसके लाभ के लिए ही नहीं था, क्योंकि इसका चेलों के लिए भी विशेष महत्व था। महान विदाई संदेश में, मसीह ने उन्हें बताया था, ''... मेरा जाना *तुम्हारे* लिए अच्छा है'' (यूहन्ना 16:7क)।

ज़िम्मेदारी दूसरे को दी गई

यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया था कि वह जा रहा है और उसकी जगह उन्हें काम करना है। उसने उन्हें बताया, ''... जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं'' (यूहन्ना 20:21)। उसने उन्हें यह भी बताया, ''... तुम ... पृथ्वी की छोर तक *मेरे* गवाह होगे'' (प्रेरितों 1:8)।

एक पल के लिए अपने आप को प्रेरितों की जगह रखें। प्रभु ने उन्हें बताया था कि वह उन्हें छोड़ देगा, पर यह पता नहीं था कि कब, कहां और कैसे। चालीस दिनों के दौरान जब भी वे उसके साथ होते थे, वे चकित होते होंगे, ''क्या अभी? क्या यहां?'' परन्तु अन्त में वे हक्के-बक्के रहकर देखते रह गए, जब उसे स्वर्ग में उठा लिया गया। जब वह बादलों में ओझल हुआ, तो कोई प्रश्न नहीं हो सकता था। वह तो *चला गया* था, सचमुच चला गया था।[19] ज़िम्मेदारी अब उन्हें दे दी गई थी।

दिमाग में कई रूपक आते हैं। एक तो प्रकृति से ही है: स्वर्ग पर उसका उठाया जाना मादा पक्षी का घोंसले से बच्चों को छोड़कर यह कहते हुए जाना है, ''अब तुम्हें अपने पैरों

पर खुद खड़े होना होगा!'' कलीसिया के जीवन से एक और उदाहरण है: स्वर्गारोहण एक मिशनरी का मण्डली को यह बताने की तरह था, ''मुझे घर वापस जाना है; अब कलीसिया का काम आपके ज़िम्मे है!''

आत्मा दिया गया

स्वर्गारोहण से प्रेरितों के लिए केवल यही घोषणा नहीं हुई कि उन पर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी डाली गई है, बल्कि उस ज़िम्मेदारी को पूरा करने के लिए ईश्वरीय सहायता पाने के लिए भी इसकी आवश्यकता थी। उन्हें यह बताने के बाद कि उसका जाना उनके लिए लाभदायक है, यीशु ने उन्हें बताया कि यह लाभदायक क्यों है: ''क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा'' (यूहन्ना 16:7ख)। ''सहायक'' जिसकी उसने बात की, पवित्र आत्मा ही था। वह आत्मा को उन पर तब तक नहीं भेज सकता था, जब तक वह राज न करता, और राज वह तब तक नहीं कर सकता था, जब तक परमेश्वर की दाहिनी ओर न बैठता। उसने कहा, ''परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा'' (यूहन्ना 16:7ग) और ''जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा'' (यूहन्ना 16:13क)।

स्वर्ग पर उसके उठाए जाने के थोड़ा पहले, यीशु ने अपने चेलों को बताया, ''और देखो, जिस की प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उस को तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो'' (लूका 24:49)। ताकि वे गलत न समझें, उसने और कहा, ''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तब तुम सामर्थ पाओगे'' (प्रेरितों 1:8क)। उन्होंने यरूशलेम में दस दिन तक प्रतीक्षा की और फिर, यहूदियों के पिन्तेकुस्त नामक पर्व के दिन पवित्र आत्मा उन पर सामर्थ से आया:

> जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे (प्रेरितों 2:1-4)।

जैसा कि पहले ध्यान दिलाया गया है, पतरस ने उस दिन के आश्चर्यकर्म से होने वाले प्रदर्शनों का इस्तेमाल इस प्रमाण के रूप में किया कि यीशु सचमुच राजा बन चुका है: ''इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके, जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उंडेल दिया है, जो तुम देखते और सुनते हो'' (प्रेरितों 2:33)। क्रम पर ध्यान दें: यीशु ने पिता से आत्मा की प्रतिज्ञा पाई और आत्मा अपने प्रेरितों पर भेज दिया।

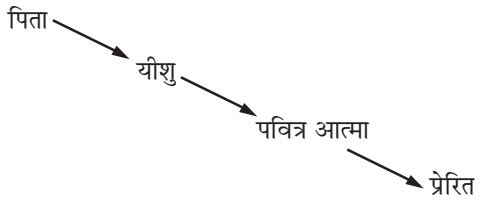

इस प्रकार प्रभु ने प्रेरितों को दी जाने वाली भारी ज़िम्मेदारी को पूरा करने के लिए उन्हें तैयार किया। पवित्र आत्मा की अगुआई में पतरस ने पहली बार सुसमाचार का भरपूरी से प्रचार किया (प्रेरितों 2:14-36)। आत्मा की अगुआई में पतरस ने लोगों को बताया कि अपने पापों की क्षमा पाने के लिए उन्हें क्या करना है (प्रेरितों 2:37, 38)। तीन हज़ार लोग सुनकर, विश्वास लाए और उन्होंने आज्ञा मानकर उद्धार पाया (प्रेरितों 2:41, 47)!

आज हम आत्मा की प्रेरणा से दिया गया वही सुसमाचार सुनकर आत्मा की प्रेरणा से दी गई उन्हीं सच्चाइयों पर विश्वास करके, आत्मा की प्रेरणा से दी गई उन्हीं आज्ञाओं को मानकर, उन्हीं आशिषों को पा सकते हैं, जिन्हें हम आत्मा की प्रेरणा के दिए गए वचन में से पढ़ते हैं। यह सब इसलिए हुआ, क्योंकि यीशु ''महिमा में उठा लिया गया'' था!

सारांश

हमने वह सब नहीं कहा, जो स्वर्गारोहण के बारे में कहा जा सकता है, पर मुझे उम्मीद है कि हम में से हर एक को पृथ्वी पर मसीह के जीवन के अन्त की इस चरम स्थिति को समझने के लिए इतना ही काफ़ी है। यीशु अब स्वर्ग में पिता के दाहिने हाथ, अपने राज्य अर्थात कलीसिया पर शासन कर रहा है, और हमारी ओर से विनती करता है। यीशु और हमारे लिए अगली चरम घटना उसका दोबारा आना होगा, जब विश्वासी लोग बादलों पर उससे मिलेंगे। अपने अध्ययन की समाप्ति पर आकर, हमें अपने आप से यह प्रश्न पूछना आवश्यक है: ''क्या हम प्रभु के द्वितीय आगमन के लिए *तैयार* हैं?''

यीशु स्वर्ग में लौट गया, ताकि उसे राजा का मुकुट पहनाया जा सके। क्या आपने उसे अपने मन का राजा बना लिया है? क्या आपने उसे अपने जीवन का प्रभु मानकर विनम्र आज्ञापालन में अपने आप को उसे दे दिया है (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:37, 38)?[20] यदि आपने अभी तक ऐसा नहीं किया है, तो मेरी प्रार्थना है कि आप आज ही उसे अपना प्रभु मान लें। यदि एक आत्मा भी आज्ञाकारिता में उसकी बात मानती है, तो इन पाठों को तैयार करने में लगा समय और परिश्रम व्यर्थ नहीं जाएगा। परमेश्वर आप सब को आशीष दे!

नोट्स

इस प्रवचन को तैयार करने के लिए कई स्रोतों का अध्ययन किया गया था, पर मेरे मूल नोट्स मुख्यतया *द क्राइसस ऑफ़ द क्राइस्ट* में स्वर्गारोहण के अलावा उस पुस्तक के अंतिम पाठों पर आधारित थे।[21] एक बार फिर, जिसे श्रेय देना चाहिए था, उसे श्रेय न दे पाने

के लिए मैं क्षमा चाहता हूं।

इस पाठ के साथ मैं फलालैन की प्रस्तुति का इस्तेमाल करता हूं, जिसमें प्रवचन के बढ़ने के साथ टुकड़े जोड़ता हूं। बोर्ड के बाईं ओर स्वर्गारोहण की बात केन्द्रित रहती है, जबकि दाईं ओर चेलों को दिखाया जाता है। ''मसीह का स्वर्गारोहण'' चार्ट में दिखाया गया है कि किस प्रकार पूरा होने पर मूल प्रस्तुति दिखाई देती है। व्यापारिक फलालैन ग्राफ के पैकेट ($^1/_4$ इंच काले बॉर्डरों वाले) टुकड़े उदाहरणों के लिए इस्तेमाल किए गए। परन्तु आप सरल उदाहरण (चार्ट पर दिखाए गए की तरह) गत्ते पर बना सकते हैं। चार्ट किसी बोर्ड पर भी बनाया जा सकता है। इस प्रवचन का ढंग विषयात्मक अधिक है। आप स्वर्गारोहण पर मुख्य हवालों को बता सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]यह शीर्षक 1 तीमुथियुस 3:16 से लिया गया है। [2]लूका 24:39. इस पुस्तक में पहले आया लेख ''यीशु की जी उठी देह'' देखें। [3]''... जब तक कि वह सब बातों का सुधार न कर ले'' वाक्यांश यीशु द्वारा वापस आने पर शारीरिक नहीं, बल्कि आत्मिक सब बातों को सुधारने के अर्थ में है। [4]यीशु के ऊपर उठाए जाने और नये नियम के समयों में विजयी नायकों के विजयी जुलूस में अन्तर किया जाता है। इफिसियों 4:8 पर संक्षिप्त टिप्पणियों के लिए, इस पुस्तक में आगे ''क्या धर्मी मुर्दे सीधे स्वर्ग जाएंगे?'' पाठ देखें। [5]यह भजन संहिता 68:18 से लिया गया है। [6]यह अधोलोक के संसार का अर्थ बताती प्रतीकात्मक भाषा है। इस पर चर्चा के लिए कि मृतकों के संसार में रहने के दौरान यीशु कहां था, इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''रोमी क्रूस पर छह घण्टे'' और ''इतिहास के तीन सबसे महत्वपूर्ण दिन'' देखें। इस पुस्तक में आगे ''मुर्दे कहां हैं?'' पाठ देखें। [7]यह शब्दावली मसीहा से जुड़े भजन (अर्थात, मसीह के बारे में बताते भजन) भजन संहिता 2:9 से ली गई है। [8]यहूदी समय के अनुसार (सूर्यास्त से सूर्योदय तक दिन की गणना करने पर) यीशु की मृत्यु उसी दिन हुई, जिस दिन उसने फसह खाया। फसह और पिन्तेकुस्त के बीच पचास दिन बीत गए (देखें लैव्यव्यवस्था 23:15, 16 और व्यवस्थाविवरण 16:9)। यदि आपके सुनने वाले ओलम्पिक खेलों के बारे में जानते हैं, तो आप पूछ सकते हैं, ''कौन सी बात अधिक रोमांचकारी है: रेस जीतना या विजयी होकर गोल्ड मैडल प्राप्त करना?'' [10]अपने सुनने वालों को घर वापसी के आनन्द को समझ आने वाले उदाहरण इस्तेमाल करें।

[11]फिलिप यैन्सी, *द जीज़स आई नैवर नियू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1995), 226. [12]वह नाम क्या था? आयत के अगले भाग में संकेत मिलता है कि वह नाम ''यीशु'' था। यदि किसी को आपत्ति हो कि वह नाम यीशु को उसके जन्म के समय दिया गया था (देखें मत्ती 1:21), तो समझाएं कि यह उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने को ध्यान में रखकर दिया गया था। अब इसे वास्तविकता में दिया जा सकता था-क्योंकि उसने छुटकारे का काम पूरा कर लिया था। [13]यह सम्भवतया सांकेतिक भाषा है, जिससे यह संकेत मिलता है कि मसीह उस स्वर्ग में से, जहां पक्षी हैं और उस स्वर्ग में से, जहां तारे हैं होकर गया और वहां पहुंच गया जहां परमेश्वर है। [14]इसका अर्थ यह नहीं है कि यीशु हमारे पापों की अनदेखी करता है और अपने आप ही उन्हें क्षमा कर देता है, बल्कि यह है कि यह जानना राहत देने वाला है कि वह सही काम करने के लिए हमारे संघर्षों को समझता और हमारे साथ सहानुभूति रखता है। [15]जहां तक मुझे मालूम है, केवल यहीं पर यीशु को परमेश्वर के दाहिने हाथ ''बैठने'' के बजाय ''खड़े'' दिखाया गया है। कुछ लोगों का विचार है कि यह पहले मसीही शहीद के प्रति सम्मान को दर्शाता है। [16]यदि आपके सुनने वाले वर्तमान समय के राज्याभिषेक से परिचित हों, तो शायद वे बीते समय (टेलीविज़न से पहले) से इसके अन्तर को समझ लें कि अधिकतर प्रजा नये राजा के मुकुट पहनने को देख नहीं सकती थी; परन्तु

राज्याभिषेक के बाद कोई व्यक्ति भीड़ के सामने आकर यह घोषणा करता था कि यह घटना हो चुकी है। फिर लोग शोर मचाते और नारे लगाते। इसी तरह पतरस ने भी कहा कि आत्मा का आना स्वर्ग की ओर से ''घोषणा'' थी कि यीशु को मुकुट पहना दिया गया है। [17]यह बात कि दानिय्येल 7 में बताया गया राज्य ''नाश नहीं होना था'' दानिय्येल 2:44 जैसा लगता है, जो मसीहा के राज्य/कलीसिया की स्थापना की भविष्यवाणी है। यह प्रतिज्ञा मत्ती 16:18, 19 में कलीसिया/राज्य के अविनाशी होने की प्रतिज्ञा जैसी भी है। [18]मैं नये नियम की उन सभी आयतों की सूची नहीं दे सकता, जिनमें यीशु को ''प्रभु'' के रूप में बताया गया है। एक नमूना यह है: प्रेरितों 2:36; रोमियों 1:4; 1 कुरिन्थियों 8:5, 6; याकूब 2:1; यहूदा 4. [19]यदि उनके मनों में कोई प्रश्न रह गया था, तो यह ''श्वेत वस्त्र'' पहने दो पुरुषों द्वारा निकाल दिया गया (प्रेरितों 1:10, 11)। [20]इस प्रवचन में से सुनाते हुए, गैर मसीहियों को बपतिस्मा लेने का निमन्त्रण देने के अलावा, अविश्वासी मसीहियों को वापस आने के लिए प्रोत्साहित करें (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)।

[21]जी. कैम्पबेल मौर्गन, *द क्राइसस ऑफ़ द क्राइस्ट* (न्यू यॉर्क: फ्लेमिंग एच. रेवल कं., 1936), 385–449.

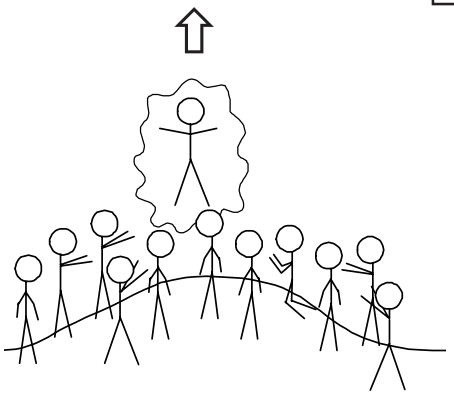

मसीह का ऊपर उठाया जाना
प्रेरितों 1:6–11; 2:1–4
मसीह की महिमा
महायाजक के रूप में
राजा के रूप में
आत्मा
चेलों की तैयारी
ज़िम्मेदारी दूसरों को दी
आत्मा दिया गया